वानिकी समाचार

अर्धवार्षिक

वर्ष 8 जुलाई से दिसम्बर 2016 अंक–2

अनुसंधान निष्कर्ष

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून

★ *मीलिया डुबिया* के काष्ठ पर काम करने की गुणवत्ता और उसको अंतिम रूप देने के विषय पर शोध से पता चला कि *मीलिया डुबिया* का काम काजी गुणवत्ता सूचकांक सागौन के 100 की तुलना में 102 है। इस काष्ठ पर सहजता से काम किया जा सकता है और 4 प्रकार की पोलिश के परीक्षण में रोगन (लैकर) को सर्वोत्तम पाया गया। इस प्रकार यह काष्ठ सागौन के सामान ही फर्नीचर तथा अन्य काष्ठ उत्पादों के लिए प्रयोग किया जा सकता है। इससे सागौन पर निर्भरता कम होगी।

★ एप्रौस्टोसीटस वंश में 2 नए परजीव्याभ अभिलिखित किए गए। ये परजीव्याभ *फाइक्स रॉक्सबर्घाई* पर गाल बनाने वाले कीट *पारोप्साइला फिसीकोला* और *मैलोटस फिलीपेंसिस* पर गाल बनाने वाले कीट *ट्रायोजा मेलोटिकोला* के अवयस्क कीटों को अपना शिकार बनाते हैं। इन परजीव्याभों का उपयोग इन कीटों के जैवकीय नियंत्रण में किया जा सकता है।

पारोप्साइला फिसीकोला कॉफिर द्वारा संक्रमित *फाइक्स रॉक्सबर्घाई* की गॉलयुक्त विकृत पत्तियां

ट्रायोजा मेलोटिकोला (क्राफोर्ड) द्वारा संक्रमित *मैलोटस फिलीपेंसिस* की गॉलयुक्त पत्तियां

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर

★ लाल इमली *(टैमारिंडस इंडिका)* किस्म रोडोकार्पा के कच्चे फलों की रंजक क्षमता को वस्त्रों के प्राकृतिक रंजक के रूप में आकलित किया गया। एंथ्रोसायनिन रंजक लाल इमली के फलों के गुद्दे से निष्कर्षित किया गया और उसमें उत्तम रंजक क्षमता पाई गई जो कि वस्त्रों को गुलाबी रंग प्रदान करता है।

लाल इमली के अपरिपक्व फल

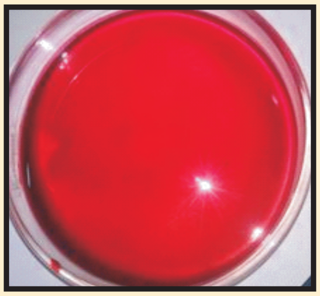

गूदा अर्क

सुखाने के बाद कपड़े का रंग

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

★ आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण मरूस्थलीय पौधे *साल्वाडोरा पर्सिका* की अक्षीय कलिकाओं के द्वारा पात्रे *(इन विट्रो)* बहुगुणन हेतु उत्तक संवर्धन तकनीक विकसित की गई। इसे इस महत्वपूर्ण प्रजाति के उत्तम संवर्धों के संरक्षण और बड़े स्तर पर संचरण में उपयोग किया जा सकता है।

★ सात पादप प्रजातियों के फफूंदरोधी गुणों का आकलन पाँच पादप रोगकारी फफूंदों के विरूद्ध किया गया। परिणामों से पता चला कि *दतूरा स्ट्रामोनिम* की पत्तियों का इथेनोलिक निष्कर्षण का

सफलतापूर्वक फफूंदरोधी के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इससे रासायनिक फफूंद रोधियों पर निर्भरता कम होगी।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

★ एक अध्ययन में पाया गया कि विभिन्न वन प्रकार अपनी संरचना, कार्य और वृक्ष प्रजातियों की उपस्थिति के कारण उनके जैवमात्रा और कार्बन भंडार दोनों में बहुत अधिक वैविध्य प्रदर्शित करते हैं। ये आंकड़े कार्बन भंडार/कार्बन पृथक्करण जैसे जलवायु परिवर्तन अध्ययनों हेतु आधार आंकड़ा प्रदान करेंगे।

★ *ऐबीस स्पेक्टाबिलिस* के बीज अंकुरण और दीर्घजीविता पर एक अध्ययन के अंतर्गत हिमाचल प्रदेश के 9 वन प्रभागों में 39 प्राकृतिक जनसंख्याओं का पता चला। यह भी पता चला कि अक्टूबर माह के दूसरे पखवाड़े में बीज संग्रहण का उत्तम समय होता है, और यह भी कि 40 से.मी. से 50 से.मी. के व्यास के वृक्ष बीज संग्रहण के लिए उत्तम स्रोत होते हैं। पौधशाला प्रौद्योगिकियों का मानकीकरण करते समय यह भी पता चला कि पौधशाला क्यारियों में 1.50 से.मी. की गहराई पर बोए जाने पर अंकुरण प्रतिशत सर्वोत्तम होता है। वायुरूद्ध आर्द्रता रोधी प्लास्टिक के थैले –5°c में सर्वोत्तम भंडारण किया जा सकता है। इससे वन विभागों को लाभ होगा।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलुरू

★ माइक्रोवेव तापन का प्रयोग करते हुए ऐसिटिक एन्हाईड्राइड के साथ काष्ठ की विलायक मुक्त रासायनिक परिष्करण प्रक्रिया का विकास किया गया। परिष्कृत काष्ठ द्वारा उत्तम जलरोधी और सुधारित विमीय स्थायित्व का प्रदर्शन किया गया और काष्ठ और काष्ठ के धरातल पर प्रकाश प्रेरित रंग परिवर्तनों में भी कमी आई। माइक्रोवेव तापन में परंपरागत तापन की अपेक्षा अभिक्रिया समय में उल्लेखनीय कमी आई। इस अध्ययन से बाह्य अनुप्रयोगों हेतु निम्न गुणवत्ता वाले प्रकाष्ठों के गुणों को उच्चीकृत करने में सहायता मिलेगी।

★ फाइबर और पॉलिमर के विभिन्न अनुपातों में लैंटाना फाइबर से सुदृढ़ किए गए पॉलीप्रोपाइलीन कम्पोजिट्स सफलतापूर्वक विकसित किए गए। लैंटाना फाइबर से भरे गए कम्पोजिट्स के गुण काष्ठ और अन्य लिग्नोसैलूलोज फाइबर के समान थे। इस प्रकार ये लैंटाना की इस प्रकार के कम्पोजिटों के निर्माण में उपयुक्तता दर्शाता है। इससे निम्न गुणवत्ता वाले प्राकृतिक संसाधनों में मूल्य संवर्धन और थर्मोप्लास्टिक कम्पोजिटों के विभिन्न काष्ठ वस्तुओं और उत्पादों में उपयोग करने में सहायता मिलेगी।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

★ रेसरपाईन मात्रा और शुष्क मूल उपज के आधार पर सर्पगंधा की 2 उच्च उपज देने वाली किस्में देश भर से 40 अनुवृद्धियों के मूल्यांकन के उपरांत विकसित की गईं।

★ संस्थान ने पूर्व में महुआ से मूल्य संवर्धित उत्पाद विकसित किए थे। संप्रति बिहार राज्य सरकार ने इस विषय में महुआ के गैर एल्कोहोलिक मूल्य संवर्धित उत्पादों हेतु रूचि प्रदर्शित की है अतः इसको राज्य वन विभाग को विस्तारित किया गया।

वृक्ष उत्पादक मेला/किसान मेला :

★ व.अ.सं., देहरादून द्वारा 28–29 नवम्बर 2016 को वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान, देहरादून में आयोजित द्वितीय भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान मेला–2016 में भाग लिया गया।

द्वितीय भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान मेला 2016 में व.अ.सं., देहरादून का स्टॉल

★ व.उ.सं.,राँची द्वारा 7 से 11 दिसम्बर 2016 को चांदीपुर, पूर्वी मदीनापुर पश्चिमी बंगाल में 28 वां कृषि शिल्प 'ओ' वाणिज्य मेले में भाग लिया गया।

★ शु.व.अ.सं., जोधपुर द्वारा 21 सितम्बर 2016 को केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा आयोजित किसान मेले में भाग लिया गया।

★ व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा 19 से 20 दिसम्बर 2016 को वन आधारित आजीविका एवं विस्तार केंद्र, त्रिपुरा द्वारा आयोजित औषधीय पौधों और पारंपरिक स्वास्थ्य देखभाल पर प्रदर्शनी में सहभागिता की गई।

विदेश दौरे :

★ डॉ. दिनेश कुमार, वैज्ञानिक–एफ, व.अ.सं., देहरादून तथा डॉ. अनिता तोमर, सामाजिक वानिकी एव पारि–पुनर्स्थापन केंद्र, इलाहाबाद ने 10 से 20 सितम्बर 2016 तक आई.पी.सी. के 25वें सम्मेलन में भाग लेने हेतु जर्मनी तथा स्वीडन यात्रा की।

★ डॉ. आर.के. कलिता, वैज्ञानिक–ई, व.व.अ.सं., जोरहाट ने "क्षेत्रीय प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण" में भाग लेने हेतु 18 से 25 सितम्बर 2016 तक नेपाल की यात्रा की।

★ डॉ. वी. शिवकुमार, वैज्ञानिक–एफ तथा डॉ. आर आनन्दलक्ष्मी, वैज्ञानिक–ई, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने डी. एस.टी. निधिकरण परियोजना की बैठक में भाग लेने हेतु 19 से 25 सितम्बर 2016 तक थाईलैण्ड की यात्रा की।

★ डॉ. सुधीर सिंह, वैज्ञानिक–एफ, व.अ.सं., देहरादून ने 25वें अन्तर्राष्ट्रीय कीटविज्ञान सम्मेलन में भाग लेने हेतु 25 से 30 सितम्बर 2016 तक ओरलान्ड़ों, यू.एस.ए. की यात्रा की।

★ श्री अमित कुमार वर्मा, अनुसंधान सहायक – I, व.अ.सं., देहरादून ने क्षेत्रीय परामर्शी कार्यशाला में भाग लेने हेतु 2 से 4 अक्टूबर 2016 तक नेपाल की यात्रा की।

★ डॉ. रश्मि, वैज्ञानिक–डी, व.अ.सं., देहरादून ने आई.यू.एफ.आर.ओ., क्षेत्रीय कांग्रेस एशिया एवं ओसिआनिया तथा प्री कांग्रेस प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लेने हेतु 21 से 27 अक्टूबर 2016 तक बीजिंग, चीन की यात्रा की।

★ डॉ. शशि कुमार, डॉ. जी.एस. गोराया, डॉ. टी.पी. सिंह एवं वी.आर. एस. रावत, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने यू.एन.एफ.सी.सी.सी. के कौप 22 में भाग लेने हेतु 9 से 12 नवम्बर 2016 को माराकेश (मोरक्को) की यात्रा की।

कार्यशालाएं/सेमीनार/बैठकें :

★ भा.वा.अ.शि.प. ने आइसीमोड के सहयोग से आर ई डी डी+ हिमालय : हिमालय में आर ई डी डी+ के क्रियान्वयन हेतु अनुभव का उपयोग'' नामक परियोजना के तहत भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में 30 अगस्त 2016, को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया।

★ 'कृषि वानिकी और आजीविका' पर हरियाणा के एस.एच.जी.एस, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के किसानों के लिए व.अ.सं., देहरादून में 26 दिसम्बर 2016 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

★ 'हितधारकों की बैठक' पर हि.व.अ.सं., शिमला में 9 से 21 सितम्बर 2016 तक आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ वैज्ञानिकों और अनुसंधान अधिकारियों ने भाग लिया।

★ 'हितधारकों की बैठक' पर का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू में 28 जुलाई 2016 को कार्यशाला का आयोजन किया गया।

★ 'अनिवार्य राज्यों के लिए वानिकी अनुसंधान की जरूरतों की पहचान करने' के लिए हि.व.अ.सं., शिमला में 16 सितम्बर 2016 को कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें राज्य के वरिष्ठ वन अधिकारी, फील्ड वन अधिकारी, विश्वविद्यालयों/सक्रिय एन.जी.ओ., प्रगतिशील किसान, महिला मंडल आदि के प्रतिनिधियों सहित रिसर्च संस्थानों आदि ने भाग लिया।

★ 'भारत में वानिकी : वर्तमान चुनौतियां और भविष्य की संभावनाएँ' पर हि.व.अ.सं., शिमला में 15 से 18 नवम्बर 2016 को कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें राज्य वन विभाग ने भाग लिया।

वन आधारित आजीविका एवं विस्तार केंद्र, अगरतला द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया गया :

★ 'बाजार सहानुबंध (लिंकेज) विकास' जिसमें एन.बी.जी.एस., अन्नया स्वयं सहायता समूह और पंचाई किसान क्लब के सदस्यों ने भाग लिया, 11 जुलाई 2016 को।

★ 'युवाओं में वन आधारित आजीविका' को बढ़ावा देने पर 15 जुलाई 2016 को, जिसमें त्रिपुरा के युवाओं ने भाग लिया।

★ 'आजीविका गतिविधियों के विस्तार' पर 6 अगस्त 2016 को, जिसमें त्रिपुरा के किसानों ने भाग लिया।

आजीविका के विस्तार पर व.आ.आ.वि.के.,अगरतला में कार्यशाला

★ 'बांस कारीगरों के लिए कौशल विकास कार्यक्रम' पर 29 सितम्बर 2016 को, जिसमें बांस कारीगरों ने भाग लिया।

★ 'लाख–संस्कृति और प्रबंधन' पर 25 अक्टूबर 2016 को, जिसमें आदिवासी समुदायों ने भाग लिया।

★ पर स्थाने (*एक्स सीटू*) संरक्षण में 'कबिराज हर्बल गार्डन का महत्व और स्वास्थ्य देखभाल प्रबंधन के पारंपरिक ज्ञान संरक्षण' पर 28 अक्टूबर 2016 को, जिसमें किसानों और आयुर्वेदिक चिकित्सकों ने भाग लिया।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर द्वारा निम्नलिखित कार्यशालाओं का आयोजन किया गया :

★ 'मूल्यवान वृक्ष प्रजातियों की खेती और विपणन में कानूनी और प्रशासनिक मुद्दों' पर 7 अक्टूबर 2016 को, जिसमें तमिलनाडु के विभिन्न क्षेत्रो कें 124 किसानों ने भाग लिया।

★ 'महत्वपूर्ण पेड़ प्रजातियों की कृषि तकनीक' पर 23 नवम्बर 2016 को जिसमें तमिलनाडु के सभी क्षेत्रों में 71 किसानों ने भाग लिया।

★ 'शहरी वानिकी' पर 25 नवम्बर 2016 को, जिसमें लगभग 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

★ 'पेड़ की खेती और प्रबंधन तकनीक' पर 30 नवम्बर 2016 को, जिसमें तमिलनाडु के सभी हिस्सों से पेड़ उत्पादकों/पेड़ उत्पादक

संघों, खेत रेडियो श्रोता समूह जैसे लाभार्थियों सहित 300 किसानों ने भाग लिया।'

- ★ कृषि वानिकी उत्पादक एवं इंटरफेसिंग उपयोगकर्ता (एफ.एफ.पी.वी.आई.डब्ल्यू–2016)' पर 21 दिसम्बर 2016 को, जिसमें पेंसिल उद्योग, प्लाईवुड उद्योग और किसानों सहित 29 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम :

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए :

- ★ शु.व.अ.सं., जोधपुर में 10 सहायक कर्मचारियों के लिए "रेगिस्तान तथा निम्नीकृत क्षेत्रों में पारिपुनर्स्थापन" पर 7 से 11 नवम्बर 2016 तक।
- ★ व.अ.सं., सम–विश्वविद्यालय, देहरादून में 30 वैज्ञानिकों तथा अनुसंधान अधिकारियों के लिए 7 नवम्बर 2016 से दस सप्ताह का आधारिक वानिकी प्रशिक्षण (अधिष्ठापन प्रशिक्षण)।

व.अ.सं., देहरादून द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए :

- ★ भारतीय कृषि वानिकी विकास, कोआपरेटिव लिमिटेड, गुडगाँव, हरियाणा के कार्मिकों के लिए 13 से 15 जुलाई 2016 तक रोपण प्रौद्योगिकी पर अल्पकालिक प्रशिक्षण।
- ★ राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन, नई दिल्ली के सहयोग से 19 सितंबर 2016 से 23 सितंबर 2016 तक "वन अग्नि आपदा जोखिम न्यूनीकरण" पर विभिन्न राज्यों के वन अधिकारियों के लिए।
- ★ उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश, शहरी केंद्र, देहरादून के किसानों एवं स्वयं सहायता समूहों के लिए 19 से 23 सितम्बर 2016 तक "औषधीय पादपों की खेती और उपयोजन" पर ।
- ★ *लैन्टाना कमारा* से हस्तनिर्मित कागज" पर 17 अक्टूबर से 21 अक्टूबर 2016 तक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डी.एस.टी.) के सीड/सारथी कार्यक्रम के तहत पी.ए.यू. लुधियाना के सहयोग से प्रायोजित किया गया।
- ★ वन विज्ञान केंद्र के तहत स्वयं सहायता समूह के लिए चण्डीगढ़ में 17 से 19 अक्टूबर 2016 तक।
- ★ वन विज्ञान केंद्र के तहत हरियाणा के स्वयं सहायता समूह के लिए पिंजौर, हरियाणा में 7 से 9 नवम्बर 2016 तक "औषधीय पादप आधारित कृषि वानिकी" पर।
- ★ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली निधिकृत परियोजना के तहत 21–23 दिसम्बर 2016 तक पॉपलर निष्पत्रकों के प्रबंधन हेतु जैवकीटनाशक के उपयोग पर प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम।
- ★ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली निधिकृत परियोजना "उत्तराखंड की ग्रामीण महिलाओं के लिए आजीविका सहायता हेतु अकाष्ठीय वन उत्पादों को बढ़ावा देने तथा वन आक्रामक प्रजातियों के उपयोग" पर कार्यक्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, खिर्सू (पौड़ी) में। प्रशिक्षण में 63 महिला किसानों ने सक्रियता से भाग लिया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए :

- ★ पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित भारतीय वन सेवा अधिकारियों के लिए 21 से 22 जुलाई 2016 तक "जैव पूर्वेक्षण–राज्य वन विभागों की भूमिका" पर। जिसमें विभिन्न राज्यों के वन उपसंरक्षक से मुख्य वनसंरक्षक स्तर के 15 भा.व.से. अधिकारियों ने भाग लिया।
- ★ "जैव–पूर्वेक्षण –यांत्रिक पद्धतियां तथा पादप–रसायन विश्लेषण" पर 17 से 19 अगस्त 2016 तक। जिसमें कुल 22 भागीदार शामिल हुये। इसी विषय पर दिनांक 22 से 23 दिसंबर 2016 को। जिसमें तमिलनाडु के विभिन्न विद्यालयों/विश्वविद्यालयों/संस्थानों के 23 भागीदार शामिल हुये।
- ★ "जैवविविधता संरक्षण तथा सतत् उत्पादन हेतु बीज प्रहस्तन और पौधशाला तकनीकें" पर 7–8 सितम्बर 2016 तक।
- ★ 19 से 24 सितम्बर 2016 तक "डी.एन.ए. मार्कर डाटा विश्लेषण" पर।
- ★ 21 से 23 सितम्बर 2016 तक "जैव उर्वरकों का उत्पादन, अनुरक्षण एवं अनुप्रयोग तकनीकों" पर।
- ★ 5 अक्टूबर 2016 को "पादप वर्गीकरण विज्ञान" में कार्यरत विश्वविद्यालयों/कॉलेजों/स्कूलों के अध्यापकों तथा अनुसंधानकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- ★ 7 नवम्बर 2016 से देश के विभिन्न राज्यों में वानिकी के क्षेत्र में कार्यरत ए.पी.सी.सी.एफ. से डी.एफ.ओ. स्तर के 23 अधिकारियों, भारतीय वन सेवा अधिकारियों के कौशल उन्नयन हेतु "वन आनुवंशिकी संसाधन प्रबंधन" पर एक सप्ताह के प्रशिक्षण कोर्स का आयोजन। प्रशिक्षण को पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित किया गया।
- ★ "कृषि वानिकी मॉडल्स –स्थापना एवं प्रबंधन" पर किसानों के लिए 24 से 26 नवम्बर 2016 तक। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रायोजित। प्रशिक्षण में 35 किसानों ने भाग लिया।

का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए :

★ बी.टी.एस.जी.–भा.वा.अ.शि.प. के तहत कर्नाटक/सीमावर्ती राज्य के 25 किसानों के लिए 16 अगस्त 2016 से 20 अगस्त 2016 तक "बांस के प्रबंधन तथा विपणन को उन्नत करना" पर ।

★ के.वी.के., चिन्तामणि के सहयोग से 18 अक्टूबर 2016 को वानिकी से संबंधित तकनीकों पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम जिसमें 77 किसानों ने भाग लिया।

★ "चन्दन की खेती तथा वानिकी से संबंधित अन्य पहलू" पर 110 किसानों हेतु दावनगेरे में 21 अक्टूबर 2016 को कृषि विज्ञान केंद्र, हिराहल्ली, तुमकुर के सहयोग से हीराहल्ली, तुमकुर में 125 किसान और के.वी.के. के कर्मचारियों हेतु 27 अक्टूबर 2016 को तथा के.एल.ई., के.वी.के., बेलागवी में 1 दिसम्बर 2016 को ।

★ किसानों, गैर सरकारी संगठनों तथा वनकर्मियों के लिए "भारतीय चन्दन काष्ठ के नाशीकीटों एवं बीमारियों का संयुक्त प्रबंधन" पर 4 नवम्बर 2016 को।

★ सी.ए.एस.एफ.ओ.एस., कोयम्बटूर के 33 परिवीक्षार्थियों एस.एफ. एस. के लिए "काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी" पर 5 से 9 दिसम्बर 2016 तक।

★ "मुख्य प्रकाष्ठ प्रजातियों की कार्यक्षेत्रीय पहचान" हेतु 5 से 9 दिसम्बर 2016 तक। जिसमें नेवल डॉकयार्ड, मुम्बई, महाराष्ट्र वन विभाग तथा उद्यमियों ने भाग लिया।

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए :

★ "बांस उत्पादन, प्रबंधन एवं विपणन" पर हिमाचल प्रदेश के किसानों के लिए राष्ट्रीय बांस मिशन, भारत सरकार, नई दिल्ली के तहत बांस सहायता समूह योजना का 5 से 9 सितम्बर 2016 तक।

★ "वन प्रबंधन के वृक्ष संवर्धन तथा आनुवंशीय पहलुओं" पर 28 से 29 सितम्बर 2016 को। जिसमें उप–वनसंरक्षक तथा वन संरक्षक स्तर के करीब 15 अधिकारियों ने भाग लिया।

★ औषधीय पादपों के सतत् उपयोजन, संरक्षण तथा खेती पर 13 से 15 अक्टूबर 2016 तक। प्रशिक्षण में ग्राम पंचायतों, कृषि विज्ञान केंद्रों, गैर सरकारी संगठनों, महिला मण्डलों के प्रतिनिधियों तथा चोपाल वन प्रभाग के अग्रगामी कर्मचारियों सहित 20 भागीदार शामिल हुये।

★ संस्थान द्वारा 27 अक्टूबर 2016 को वन विज्ञान केंद्र, जगतसुख, मनाली, जिला कुल्लु में "कृषि वानिकी द्वारा सतत् विकास" पर। इसमें लगभग 30 किसानों और उद्यान वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

★ हिमाचल प्रदेश, वन विभाग, अनुसंधान स्कंध, सुन्दरनगर के सहयोग से 22 से 24 नवम्बर 2016 तक हिमाचल प्रदेश, वन विभाग के 31 अग्रगामी कार्यक्षेत्रीय कर्मियों के लिए क्षमता वृद्धि प्रशिक्षण कार्यक्रम।

★ संस्थान द्वारा भल्ला, जिला डोडा, जम्मू–कश्मीर में 29 नवम्बर 2016 को "अतीश, बनक्करी, छोरा तथा अन्य महत्वपूर्ण शीतोष्ण औषधीय पादपों" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम। जिसमे 43 भागीदार शामिल हुये।

★ जम्मू क्षेत्र के 36 किसानों के लिए 2 दिसम्बर 2016 को वन विज्ञान केंद्र, जानीपुर, जम्मू में "औषधीय पादपों की पौधशाला तकनीकें तथा खेती" पर।

★ 6 से 8 दिसम्बर 2016 तक "पौधशाला के नाशीकीटों एव रोग" पर। जिसमें हिमाचल प्रदेश वन विभाग के कार्यक्षेत्रीय कर्मियों तथा विद्यार्थियों ने भाग लिया।

★ "परती भूमियों के पारिपुनर्स्थापन" पर 15 से 17 दिसम्बर 2016 तक जिसमें हिमाचल प्रदेश वन विभाग, शैक्षिक संस्थानों, फील्ड ग्रामीण विकास विभाग तथा अनुसंधान संस्थानों के 30 भागीदार शामिल हुये।

परती भूमियों के पारिपुनर्स्थापन पर प्रशिक्षण

★ "वन पारिपद्धतियों में तितलियों सहित कीटों के पारितंत्र तथा जीवविज्ञानीय नियंत्रण" पर 29 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2016 तक। जिसमें 20 कार्यक्षेत्रीय कर्मियों तथा विद्यार्थियों ने भाग लिया।

★ **व.उ.सं., राँची** द्वारा एस.पी.डब्लयू.डी., राँची के सहयोग से 20 दिसम्बर 2016 को पश्चिमी बंगाल के पुरूलिया जिले के प्रगतिशील किसानों के लिए "पलाश, बेर, कुसुम तथा *फ्लेमेंजिया सेमिआलाटा* की खेती से किसानों की आजीविका वृद्धि पर किसानों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

व.व.अ.स., जोरहाट द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए :

★ वन आधारित आजीविका एवं विस्तार केंद्र, अगरतला द्वारा 7 जुलाई 2016 को आमताली पश्चिमी त्रिपुरा के शिल्पियों के लिए "बांस प्रसार, परीक्षण तथा मूल्यवृद्धि" पर।

★ ''बांस हस्तशिल्प हेतु क्षमतावृद्धि तथा कौशल विकास'' पर 5 जुलाई 2016 से 18 जुलाई 2016 तक कस्तूरबा ग्राम सेवा केंद्र, परिजात, बोकोटा, सिवसागर, असम के स्थानीय लोगों के लिए।

★ ''बांस हस्तशिल्पियों द्वारा ग्रामीण युवकों की आजीविका के साधन बढ़ाने हेतु कौशल विकास एवं क्षमता वृद्धि'' पर 6 सितंबर 2016 से 22 सितंबर 2016 तक।

★ तकनीकी अनुप्रयोग उत्तर–पूर्वी केंद्र एवं रीच भारत सरकार द्वारा प्रायोजित ''वनीय मशरूम की खेती'' पर 26 सितंबर 2016 से 30 सितंबर 2016 तक।

'वनीय मशरूम की खेती' पर प्रशिक्षण

★ ''लाख की खेती एवं प्रक्रमण पर कौशल विकास प्रशिक्षण'' 1 नवम्बर 2016 को। जिसमें व.व.अ.सं., जोरहाट, प्रदर्शन ग्राम, विभिन्न एन.जी.ओ. तथा स्वयं सहायता समूहों ने भाग लिया।

★ जी.बी. पन्त राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण एवं सतत् विकास, एन.ई., ईटानगर (ए.पी.) के सहयोग से ''बांस मूल्य श्रृखंला'' पर मिआओ तथा छांगलांग, अरूणाचल प्रदेश के लोगों के लिए 10 नवम्बर 2016 से 14 नवम्बर 2016 तक ''भू–दृश्य पहल'' सुदूर–पूर्वी हिमालय (एच.आई. – एल.आई.एफ.ई.) परियोजना के तहत। संयुक्त पर्वतीय विकास अन्तर्राष्ट्रीय केंद्र (आई.सी.आई.एम.ओ.डी.), नेपाल द्वारा प्रायोजित।

★ समुदायों की आजीविका वृद्धि के लिए बांस संसाधनों का विकास'' पर 22 नवम्बर 2016 को। जिसमें विभिन्न राज्यों के 23 भा.व.से. अधिकारियों ने भाग लिया। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित किया गया।

★ अगरकाष्ठ : पौधशाला एवं रोपण प्रबंधन, अगर वृक्ष का कृत्रिम टीकाकरण पर 28 नवम्बर और 29 नवम्बर 2016 को।

★ अरण्यक, गोहाटी (असम) के तीन कार्यक्षेत्रीय कर्मियों के लिए ''पौधशाला प्रबंधन के सिद्धान्त, ''पौधशाला नाशी कीट एवं रोग संयुक्त प्रबंधन,'' ''मुख्य ईंधन/घास/चार प्रजातियों के लिए पद्धतियों का पैकेज'' ''वर्मीकम्पोस्टिंग तकनीक एवं अनुप्रयोग'', ''वानस्पतिक प्रसार तकनीकें'' तथा ''बीज प्रौद्योगिकी'' पर 27 दिसम्बर से 29 दिसम्बर 2016 तक प्रशिक्षण।

उ.व.अ.सं., जबलपुर द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए :

★ म.प्र. राज्य वन विभाग द्वारा निधिकृत अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त, जबलपुर के ''शहरी रोपणी में ''वानिकी में जैव उर्वरकों का अनुप्रयोग'' पर 5 जुलाई 2016 को।

★ एफ.एस.आई., नागपुर के साथ संयुक्त रूप में 28 से 30 जुलाई 2016 तक नागपुर में, एफ एस आई, नागपुर के कार्यक्षेत्रीय स्टाफ के लिए ''मध्य भारत के वनों में नाशी कीटों और बीमारियों द्वारा वृक्ष प्रजातियों के नुकसान का आकलन और रिकार्डिंग करने हेतु।

★ आई ओ आर ए इकोलोजिकल सोल्यूशन दिल्ली से संबद्ध स्वयं सहायता समूह सदस्यों के लिए 22 से 24 सितम्बर 2016 तक ''पौध उत्पादन एवं रोपणी प्रबंधन '' पर।

★ नागपुर में महाराष्ट्र राज्य वन विभाग के अग्रगामी स्टाफ के लिए ''केन्डीडेट धन वृक्ष चयन'' पर 14–15 अक्टूबर 2016 तक।

★ विद्यार्थियों तथा संबद्ध अनुसंधानकर्ताओं के लिए 17 से 21 अक्टूबर तक ''पादप जगत का वर्गीकरण'' पर ।

★ वन विज्ञान केंद्र, जबलपुर (म.प्र.) के तहत 8 से 9 दिसम्बर 2016 को उन्नत नर्सरी तकनीक, वृक्ष सुधार, कृषिवानिकी, वन रोपणियों/वृक्षारोपणों के कीटों तथा रोगों का समन्वित प्रबंधन पर।

व.अ.मा.सं.वि.के., छिन्दवाड़ा द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए :

★ महाराष्ट्र के राज्य वन विभाग के कार्मिकों के लिए 29 अगस्त 2016 को वन अनुसंधान पौधशाला, जे बी साईन्स कालेज परिसर, वर्धा में, चिरौंजी की पौधशाला तकनीकें, वन पौधशाला रोपणियों में रोग एवं नाशी कीटों के निवारक उपायों, जैव उर्वरकों तथा आर्गेनिक कृषि पर।

★ ''चिरौंजी की पौधशाला तकनीकें'' तथा ''एन.टी.एफ.पी., फसल, प्रक्रमण तथा मूल्यवृद्धि/वनों में खाद्य'' पर बीजागोड़ा ग्राम, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) में 23 सितंबर 2016 को। प्रशिक्षण में किसान, ग्रामीण तथा महिलायें शामिल थीं।

★ सरकारी मिडिल स्कूल, पोआमा एवं खांसबाड़ा, छिन्दवाड़ा विद्यार्थियों के लिए 2–3 नवम्बर को पर्यावरण जागरूकता पर।

★ पर्यावरण जागरूकता एवं जैवविविधता संरक्षण पर सरकारी मिडिल स्कूल, राजखोह, जिला छिन्दवाड़ा में 7 दिसम्बर 2016 को तथा सरकारी मिडिल स्कूल जमुनिया, जिला छिन्दवाड़ा में 8 दिसम्बर 2016 को।

शु.व.अ.सं., जोधपुर द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए :

- ★ ''पौधशाला प्रबंधन'' पर 27 से 28 सितम्बर 2016 को। जिसमें राजस्थान के विभिन्न जिलों से, रेंज अधिकारी, फोरेस्टर, फारेस्ट गार्ड्स, वी.एफ.पी.एम.सी. सदस्यों आदि ने भाग लिया।
- ★ पोषक तत्वों से भरपूर तथा औषधीय दृष्टि से महत्वपूर्ण *मोमोर्डिका डाईओसिया* (कंकेड़ा) की मूल्यवर्धन पर 4 सितंबर 2016 से 6 सितंबर 2016 तक भूरकी देवी महिला स्वयं सहायता वर्ग, जम्बूरी , आबू रोड़, सिरोही (राजस्थान) के जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र में प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम।

आबू रोड के आदिवासी बहुल क्षेत्र में भूरकी देवी महिला स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के लिए *मोरर्डिका डाईओक* (कंकेडा) के मूल्यवर्धन पर प्रशिक्षण–सह–प्रदर्शन कार्यक्रम

- ★ ''मरूभूमियों तथा निम्नीकृत क्षेत्रों के पारिपुनर्स्थापन'' हेतु 7 से 11 नवम्बर 2016 तक।
- ★ वन विज्ञान केंद्र, बीकानेर के तहत 8 से 10 नवम्बर 2016 तक भीमसेन चौधरी किसान घर, स्वामी केशवानन्द कृषि विश्व विद्यालय, बीकानेर में ''वानिकी तथा कृषि वानिकी की नई तकनीकों पर कार्यक्रम में राज्य वन विभाग, राजस्थान के अग्रगामी स्टॉफ, बीकानेर सर्किल के वी.एफ.पी.एम.सी. सदस्य किसानों ने भाग लिया।
- ★ वन विज्ञान केंद्र, राजकोट के तहत भुज, गुजरात में 28 से 30 नवम्बर 2016 तक ''वानिकी तथा कृषि वानिकी को नई तकनीकों'' पर जिसमें राज्य वन विभाग के अग्रगामी स्टाफ तथा गुजरात के किसानों ने भाग लिया।
- ★ राजस्थान वन विभाग के अग्रगामी स्टाफ के लिए 8–9 दिसंबर 2016 को पौधशाला प्रबंधन पर। जिसमें जयपुर सर्किल के कुल 30 भागीदार (रेंजर्स, फोरस्टर्स, फॉरेस्ट गार्ड्स) शामिल हुये।
- ★ भा.व.से. अधिकारियों के लिए ''नाजुक मरूस्थल पारिपद्धति के सतत् विकास हेतु संयुक्त पद्धति'' पर 19 से 23 दिसम्बर 2016 तक पुनश्चर्या प्रशिक्षण कोर्स।

राजभाषा समाचार :

★ **हिन्दी सप्ताह**

- भा.वा.अ.शि.प. देहरादून में 7 से 14 सितम्बर 2016 को।
- व.अ.सं., देहरादून में 12 से 23 सितम्बर 2016 को।

हिंदी सप्ताह समारोह के अवसर पर सभा को संबोधित करते महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प.

★ **हिंदी पखवाड़ा**

- शु.व.अ.सं., जोधपुर में 14 से 28 सितम्बर 2016 तक।
- हि.व.अ.सं., शिमला में 14 से 28 सितम्बर 2016 तक।
- उ.व.अ.सं., जबलपुर में 15 से 29 सितम्बर 2016 तक।
- व.व.अ.सं., जोरहाट में 14 से 28 सितम्बर 2016 तक।
- व.उ.सं., राँची में 1 सितम्बर से 15 सितम्बर 2016 तक।

★ व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में 19 सितम्बर 2016 को, व.जै.सं., हैदराबाद में 14 सितम्बर 2016 को हिंदी दिवस तथा का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरु में 30 नवम्बर 2016 को आधिकारिक भाषा अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया।

अनुसंधान सलाहकार समूह (आर.ए.जी.) की बैठकें :

- ★ व.अ.सं., देहरादून में 28 से 29 सितम्बर 2016 को।
- ★ व.जै.सं., हैदराबाद में 30 सितम्बर 2016 को।
- ★ का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरु में 3 से 4 अक्टूबर 2016 को।
- ★ उ.व.अ.सं., जबलपुर में 5 से 6 अक्टूबर 2016 को।
- ★ हि.व.अ.सं., शिमला में 7 अक्टूबर 2016 को।
- ★ शु.व.अ.सं., जोधपुर में 13 से 14 अक्टूबर 2016 को।
- ★ व.व.अ.सं., जोरहाट में 18 से 19 अक्टूबर 2016 को।
- ★ व.उ.सं., राँची में 20 से 21 अक्टूबर 2016 को।
- ★ व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में 25 से 26 अक्टूबर 2016 को।

विविध :

★ **वन महोत्सव :**

- का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरु में 8 जुलाई 2016 को।
- हि.व.अ.सं., शिमला में 22 जुलाई 2016 को।
- शु.व.अ.सं. जोधपुर में 24 जुलाई 2016 को।
- व.अ.सं., देहरादून में 28 जुलाई 2016 को।

★ हि.व.अ.सं., शिमला में पर्वतीय संस्कृतियों पर अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस 2016 : विविधता का उत्सव मनाने और पहचान को मजबूत करने के लिए 11 दिसम्बर 2016 को मनाया गया।

★ व.अ.सं., देहरादून में शहीदी दिवस 11 सितम्बर 2016 को मनाया गया।

★ व.अ.सं., देहरादून में राष्ट्रीय एकता दिवस 31 अक्टूबर 2016 को मनाया गया।

★ व.अ.सं., देहरादून; व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर; शु.व.अ.सं., जोधपुर; व.व.अ.सं., जोरहाट में 31 अक्टूबर से 5 नवम्बर 2016 को भ्रष्टाचार की अखंडता और उन्मूलन को बढ़ावा देने में सार्वजनिक भागीदारी पर जागरूकता सप्ताह मनाया गया।

★ उ.व.अ.सं., जबलपुर में 19 अगस्त से 3 सितम्बर 2016 तक सद्भावना पखवाड़ा दिवस मनाया गया।

★ वा.अ.मा.सं.वि.कें., छिन्दवाड़ा में 19 से 25 नवम्बर 2016 को कौमी एकता सप्ताह मनाया गया।

★ व.उ.सं., राँची में 26 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक स्वच्छ भारत अभियान सप्ताह मनाया गया।

★ भा.वा.अ.शि.प., देहरादून, व.अ.सं., देहरादून, व.व.अ.सं., जोरहाट, व.आ.आ.वि.के., अगरतला में 26 नवम्बर 2016 को संविधान दिवस मनाया गया।

★ बां.बे.उ.अ.के., आईजॉल में 25 नवम्बर 2016 को 'भारतीय वन सेवाओं के 50 वर्ष' पर एक आयोजन किया गया।

अकादमिक ऑडिट

★ शु.व.अ.सं., जोधपुर में 30 जून से 2 जुलाई 2016 तक तथा व.जै.सं, हैदराबाद में 1 से 2 सितम्बर 2016 को डॉ. रामप्रसाद, भा.व.से. (से.नि.), डॉ. जे.के. रावत, भा.व.से.(से.नि.) तथा प्रो. एम.एस.एम. रावत, पूर्व उपकुलपति के दल ने अकादमिक ऑडिट किया।

★ उ.व.अ.सं., जबलपुर में 25 से 27 जुलाई 2016 तक तथा व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में 27 से 29 अगस्त 2016 तक अकादमिक ऑडिट किया गया जिसमें उपर्युक्त दल के साथ श्री सुनीश बक्शी, भा.व.से, डी.आई.जी. (आर.टी.), पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने भी भाग लिया।

★ का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू में 30 एवं 31 अगस्त 2016 को अकादमिक ऑडिट किया गया जिसमें उपर्युक्त दल के साथ श्री निशीथ सक्सेना भा.व.से., ए.आई.जी.(आर.टी.), पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने भी भाग लिया।

आकाशवाणी/दूरदर्शन के माध्यम से वानिकी को लोकप्रिय बनाना :

★ का.वि.प्रौ.सं., बंगलुरू द्वारा एक कन्नड़ समाचार चैनल, सुदी टीवी न्यूज पर 29 नवम्बर 2016 को 'संग्रहालय पर एक डाक्यूमेंटरी' विषय पर वार्ता।

★ व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा प्रसार भारती, जोरहाट केंद्र से 16 सितम्बर 2016 को 'सामाजिक वानिकी के लिए प्रजातियों का चयन' पर रेडियो वार्ता।

वा.अ.मा.सं.वि.के, छिन्दवाड़ा द्वारा आकाशवाणी, छिन्दवाड़ा से निम्नलिखित प्रसारण किये गये :

★ 'मध्य प्रदेश में कृषि वानिकी' पर 22 जुलाई 2016 को।

★ 'जैविक उत्पाद उपयोग' और 'मशरूम की खेती' पर 25 से 26 सितम्बर 2016 को।

★ 'जैविक खेती' पर 4 दिसम्बर 2016 को।

★ 'औषधीय पौधों के उपयोग' पर 23 दिसम्बर 2016 को ।

★ 'मोबाइल के उपयोग/दुरूपयोग–बच्चों को संदेश' पर 24 दिसम्बर 2016 को।

★ 'चिरौंजी की नर्सरी तकनीक' पर 23 दिसम्बर 2016 से 28 दिसम्बर 2016 को।

डॉ. सुरेश गैरोला, भा.वा.अ.शि.प., के नये महानिदेशक

डॉ. सुरेश गैरोला भा.व.से. (एम.एच. : 1982) ने दिनांक 28 मार्च 2017 के अपराह्न में महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. के पद का कार्यभार ग्रहण किया।

- 'वानिकी समाचार' में प्रकाशित सामग्री सम्पादक मण्डल के विचारों को अनिवार्यतः प्रतिबिंबित नहीं करती है।
- प्रकाशन हेतु सामग्री मानद सम्पादक को प्रेषित की जा सकती है।
- डिजिटल संस्करण www.icfre.gov.in पर उपलब्ध है।

संरक्षकः
डॉ. सुरेश गैरोला, महानिदेशक
सम्पादक मण्डलः
श्री विपिन चौधरी, उप महानिदेशक (विस्तार), अध्यक्ष
श्री वी.आर.एस. रावत, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग), मानद सम्पादक
श्री रमाकान्त मिश्र, वैज्ञानिक–'बी' (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग), सदस्य

प्रेषकः
श्री वी.आर.एस. रावत
सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार)
विस्तार निदेशालय, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
ई–मेल : adg_mp@icfre.org
दूरभाष : 0135–2224814 , फैक्स : 0135–2750693